मन्सा सेवा - 57

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ डबल विदेशियों ने मधुबन में कौन-सी विशेष सेवा की? क्या किया? ब्रह्मा बाबा को प्रत्यक्ष किया। स्टेम्प का फंक्शन मनाया। विशेष योग भी लगाया ना। **पॉवरफुल योग लगाया तो विध्न विनाशक हो गये ना।**

➳ _ ➳ चाहे मधुबन निवासियों के योग ने, चाहे डबल विदेशियों के योग ने, चाहे चारों ओर ब्राह्मण बच्चों के योग ने कमाल की ना। **क्योंकि चारों ओर सबका यह एक ही संकल्प था कि ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करना ही है।**

➳ _ ➳ **फिर कोई ने भाग-दौड़ की सेवा की, कोई ने मंसा सेवा की, कोई ने वाचा सेवा की, लेकिन जिन्होंने जो भी योगयुक्त होकर सेवा की ऐसे सेवाधारियों को सफलता की मुबारक।**

➳ _ ➳ कितनी खुशी हुई क्योंकि ब्रह्मा बाप से सबका दिल का अति सूक्ष्म प्यार है। सभी ने ब्रह्मा बाप को देखा है या जानते हो? क्या कहेंगे - देखा है या जाना है? जो कहते हैं हमने देखा है वह हाथ उठाओ। **(09/03/1994)**

➢ **शक्तिशाली योग क्या है ?**

➳_ ➳ जहा मन बुध्धि दोनों ही एकाग्र हो जाय

→ **योग की परिभाषा अर्थात**

- संबंध
- CONNECTION
- यूनियन
- मिलन

→ **योग अर्थात मिलन आत्मा का परमात्मा के साथ**

- उसका आधार है
  - **पवित्र बुध्धि**

→ **शक्तिशाली योग का पवित्रता आधार भी ही**

→ **शक्तिशाली योग का पवित्रता परिणाम भी है**

➳_ ➳ देह भान की विस्मृति / देह के भान को भूल जाना

→ **जो जो चीजे देह के भान में लाती है**

- वह सभी योग में बाधा है
  - देह और देह का भान, देह के तरफ आकर्षित करने वाली सारी चीजो को भूल जाना है उसकी हमें सम्पूर्ण विस्मृति हो

→ **देह के तल से ही आत्मा उपर उठी**

→ **देह की जो CONSCIOUS LEVEL है, उससे उपर उठ जाना है**

- देह के संबंध
- देह की प्राप्ति
- देह के आकर्षण
- देह के पदार्थ
- देह की वस्तु
- देह के धर्म
  - यह सारी चीजो को एक साइड रख देना है
  - देह, देह का भान, देह के संबंधो को भूलना है

➳_ ➳ अपने को आत्मा निश्चय करना है

→ **अपने को आत्मा ही नहीं जाना तो,**

- परमात्मा को भी REALIZE नही कर सकेंगे
  - आत्मा को जाना माना परमात्मा को जाना
  - आत्मा को जान उसमे स्थित हो जाना है
  - आत्मिक स्वरुप का अभ्यास बढ़ाना है
  - ऐसा आत्मिक स्वरुप में लीन हो जाना है, की आत्मा अपनी सुध बुध ही भूल जाय
  - और गीत गाती रहे की 1 बाप दूसरा न कोई
  - यह है नेचुरल पवित्रता

➳_ ➳ राजयोग का पहला स्तंभ है **ब्रह्मचर्य**

→ ब्रह्मचर्य अर्थात **ब्रह्म में स्थित होना**

→ ब्रह्मचर्य अर्थात **ब्रह्म लोक में स्थित होना**

→ ब्रह्मचर्य अर्थात **शांतिधाम का बार बार अनुभव करना**

→ ब्रह्मचर्य अर्थात **परमधाम में ज्यादा से ज्यादा समयतक स्थित होना**

→ ब्रह्मचर्य अर्थात अपने **स्वधर्म में स्थित होना**

→ ब्रह्मचर्य अर्थात अपने **अनादी स्वरुप में स्थित होना**

- यह ब्रह्मचर्य कि वास्त्विक परीभाषा है

→ **ब्रह्मचर्य अर्थात जो ब्रह्मा का आचरण था**

→ **उसका अनुकरण / अनुशरण करना**

- **ब्रह्मचर्य को खंडन करने वाली चीजे**
  - देखना
  - सुनना
  - प्रशंशा करना
  - प्रभावित होना

- स्पर्श करना
- समीप जाना

→ **राजयोग का प्रथम आधार ब्रह्मचर्य है**

→ **अर्थात अपने घर में ज्यादा से ज्यादा समय तक टिके रहना**

→ **अपने घर को याद करना**

➳_ ➳ **दुसरा स्तंभ है दैवी गुण**

➳_ ➳ **तीसरा स्तंभ है सत्संग**

→ सत्संग अर्थात जो **सत चित आनदं स्वरुप कि याद**

→ सत्संग अर्थात **एक के प्यार में मग्न**

→ सत्संग अर्थात **एक की याद**

→ सत्संग अर्थात उस एक में **विश्वास**

→ सत्संग अर्थात उस एक में **निश्चय**

→ सत्संग अर्थात उस एक का **सहारा**

→ सत्संग अर्थात उस एक की **पनाह**

→ सत्संग अर्थात उस **एक का बल** और **भरोषा**

→ सत्संग अर्थात उस एक के प्रति ही **समर्पण भाव**

→ सत्संग अर्थात उस एक से ही **सर्व संबंध**

→ सत्संग अर्थात उस एक के प्रति **सर्व मन के भाव**

→ सत्संग अर्थात उस एक के प्रति **निष्ठा**

→ सत्संग अर्थात उस एक के प्रति ही **FAITH**

- **यह जो स्थिति है मन की वह सबसे शक्तिशाली स्थित है**